आरती लीजो

आरती, श्रीगुरु की पूजा का एक रूप है, यह शिष्य की भक्ति की बाह्य अभिव्यक्ति है। 'आरती लीजो', शीर्षक आरती, १९६० के दशक में बाबा मुक्तानन्द के लिए उनके एक भक्त और भारत के सुप्रसिद्ध गायक, श्री हरि-ओम शरण ने लिखी थी। उस समय, बाबा जी के साथ होने वाले सत्संगों के समापन पर साधक प्रायः 'आरती लीजो' गाया करते थे। १९८० के दशक के आरम्भ में गुरुमाई जी ने गुरुदेव सिद्धपीठ में, इसे दोपहर की आरती के रूप में गाने की परम्परा स्थापित की जहाँ कई वर्षों तक यह आरती गाई जाती रही।

'आरती लीजो' सिद्धयोग विद्यार्थियों के लिए वह अनमोल माध्यम है जिसके द्वारा वे बाबा जी के प्रति अपना आदर, भक्ति और प्रेम अर्पित करते हैं—वह अमूल्य स्तुति जिसे गाकर वे बाबा जी की महानता का गुणगान करते हैं व उनके प्रति अपनी कृतज्ञता को अभिव्यक्त करते हैं।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

आरती लीजो

ध्रुवपद

हे नित्यानन्द, आप जो अज [अजन्मे] हैं, अविनाशी हैं, पूर्ण हैं व प्रकाश के प्रसारक हैं;
हे मुक्तानन्द आप, जो पूर्ण हैं, प्रकाश के प्रसारक हैं, हमारी आरती को स्वीकार कीजिए।

पद १

नभ [आकाश] और धरणी [धरती] आपकी आरती के थाल हैं; चन्द्र और सूरज, दोनों उज्ज्वल दीप हैं; समस्त अगर और चन्दन आपको अर्पित धूप हैं; मेरु पर्वत आपका झूला है और समस्त वृक्ष-राशि आपके पवित्र चँवर हैं।

पद २

समस्त वनस्पतियाँ आपको अर्पित फूल हैं; सप्त-सागर आपके जल की झारियाँ [जल परोसने के पात्र] हैं; हृदयाकाश में अनाहत नाद के बाजे बजते हैं; सुमधुर रागों की ऐसी ध्वनियाँ गुंजायमान हैं जिनसे यमदेव भी डर जाते हैं।

पद ३

हे गोपाल, चार प्रकार के अन्न-पदार्थ आपका रसयुक्त नैवेद्य है। चारों दिशाओं के लोक-लोकान्तर आपके मन्दिर हैं। हे स्वयं प्रकाशित, प्रत्येक हृदय, प्रत्येक देह आपका आसन है।

पद ४

हे गुरुदेव, वेदों के महावाक्य आपके चरणामृत के समान हैं। सद्गुरु का पूजन-वन्दन करने वाले जो नर-नारी श्रीगुरु के चरणामृत का पान करते हैं, उनके समस्त बन्धनों का नाश हो जाता है अर्थात् वे मुक्त हो जाते हैं।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © १९८३, २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।